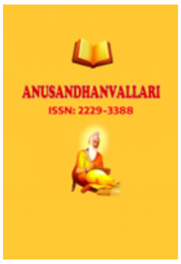

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा के स्तर का अध्ययन: एक विस्तृत मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

[1]मणिप्रभा राय, [2]डॉ लुभावनी त्रिपाठी

[1]शोधार्थी, [2]प्रोफेसर ऍवं शोध निर्देशक
[1,2]शिक्षा विभाग कलिंगा विश्वविद्यालय,रायपुर

1. प्रस्तावना

अभिप्रेरणा शिक्षा–मनोविज्ञान का केंद्रीय अवधारणा–क्षेत्र है, जो विद्यार्थियों के सीखने, उपलब्धि की दिशा में निरंतर प्रयास, लक्ष्य–निर्धारण, आत्म–अनुशासन तथा कार्य के प्रति समर्पण जैसे व्यवहारों का मूल प्रेरक कारक है। विशेषतः किशोरावस्था में, विद्यार्थी अनेक सामाजिक–भावनात्मक परिवर्तनों से गुजरते हैं, जिसके कारण उनकी शिक्षा के प्रति रुचि, अध्ययन–निष्ठा, perseverance (दृढ़ता), प्रयास–निरंतरता तथा उपलब्धि–उन्मुखता में तीव्र परिवर्तन होते हैं। इस संदर्भ में अभिप्रेरणा का उच्च स्तर न केवल विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता में सहायता करता है, बल्कि उनके व्यक्तित्व, स्व–अनुशासन, स्व–धारणा, आत्म–प्रभाविता तथा सामाजिक अनुकूलन को भी सुदृढ़ बनाता है।

इसके विपरीत, अभिप्रेरणा का निम्न स्तर विद्यार्थियों में अध्ययन–रुचि की कमी, असंगठित अध्ययन–आदतें, प्रयास में अनियमितता तथा भविष्य के प्रति अस्पष्ट एवं अनिर्णयात्मक दृष्टिकोण का कारण बन सकता है।

इसी पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध का उद्देश्य यह समझना है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी अभिप्रेरणा के किस–किस स्तर पर पाए जाते हैं, उनका वितरण किन पैटर्नों का अनुसरण करता है, तथा आगे की शैक्षिक योजना, मार्गदर्शन एवं विद्यार्थियों के मानसिक–शैक्षणिक उन्नयन में इन निष्कर्षों की क्या भूमिका हो सकती है।

2. शोध उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का केंद्रीय उद्देश्य निम्नलिखित है-उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा के स्तर का वैज्ञानिक, व्यवस्थित एवं वस्तुनिष्ठ अध्ययन करना।इस उद्देश्य का लक्ष्य यह समझना है कि विद्यार्थी किस प्रेरणा–स्तर पर विद्यमान हैं, विभिन्न श्रेणियों में उनका वितरण किस प्रकार है, तथा क्या विद्यार्थियों में उपलब्धि–निष्ठता, अध्ययन–रुचि एवं लक्ष्य–चेतना के प्रवाह में कोई महत्वपूर्ण झुकाव या परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है।

3. शोध पद्धति

3.1 शोध रूपरेखा

इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति अपनाई गई, जो शिक्षा–मनोविज्ञान में व्यापक रूप से विद्यार्थियों के दृष्टिकोण, अभिगम, मूल्य एवं मनोवैज्ञानिक चरों के अध्ययन हेतु उपयोगी मानी जाती है। इस पद्धति का उद्देश्य किसी घटना का *बिना हस्तक्षेप के* उसके यथार्थ रूप में अध्ययन करना है। यह दृष्टिकोण एक व्यापक एवं प्रतिनिधिक प्रतिचयन के आधार पर संपूर्ण विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा प्रवृत्तियों को समझने में सहायक सिद्ध हुआ।

3.2 जनसंख्या एवं प्रतिदर्श

जनसंख्या में जगदलपुर क्षेत्र के सभी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 11वीं के विद्यार्थी सम्मिलित थे। प्रतिदर्श चयन में उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन पद्धति का उपयोग किया गया, जिससे कुल 800 विद्यार्थी अध्ययन में सम्मिलित किए गए, जो एक सुदृढ़, पर्याप्त एवं सांख्यिकीय दृष्टि से विश्वसनीय प्रतिचयन है। यह प्रतिदर्श विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, लिंग, विद्यालय–प्रकार एवं शैक्षिक धाराओं का संतुलित प्रतिनिधित्व करता है।

3.3 शोध उपकरण

अभिप्रेरणा के मापन हेतु प्रो. टी. आर. शर्मा द्वारा विकसित "अकादमिक उपलब्धि अभिप्रेरणा परीक्षण (AAMT–ST)" का प्रयोग किया गया। यह उपकरण-

- विद्यार्थियों की लक्ष्य–निष्ठा,
- अध्ययन–प्रयास,
- धैर्य एवं आत्म–अनुशासन,
- उपलब्धि–उन्मुखता

जैसे मनोवैज्ञानिक आयामों का सटीक एवं विश्वसनीय आकलन करता है। इसकी आंतरिक संगति एवं वैधता उच्च स्तर की रिपोर्ट की गई है, जिससे यह भारतीय विद्यार्थियों के शैक्षणिक संदर्भ में अत्यंत उपयुक्त सिद्ध होता है।

3.4 आँकड़ा–संग्रह एवं विश्लेषण

सभी विद्यार्थियों को शांत, प्रेरक एवं व्यवधान–रहित वातावरण में उपकरण प्रशासित किया गया।

एकत्रित अंकों को निम्न सात श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया- अत्यधिक निम्न, निम्न, औसत से कम, औसत, औसत से अधिक, उच्च, अत्यधिक उच्च। संपूर्ण विश्लेषण प्रतिशत वितरण पद्धति द्वारा किया गया, जिससे विद्यार्थियों के अभिप्रेरणा–स्तरों की स्पष्ट एवं तुलनात्मक स्थिति प्राप्त की जा सके।

4. परिणाम एवं विश्लेषण

4.1 अभिप्रेरणा स्तर का सांख्यिकीय विवरण

तालिका क्रमांक 4.1

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा का स्तर का प्रतिशत वितरण एवं संख्या

क्रमांक	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत	अभिप्रेरणा का स्तर
1	4	0.50%	अत्यधिक निम्न
2	26	3.25%	निम्न
3	118	14.75%	औसत से कम
4	176	22.00%	औसत
5	214	26.75%	औसत से अधिक
6	192	24.00%	उच्च
7	70	8.75%	अत्यधिक उच्च
कुल	800	100%	

तालिका क्रमांक 4.1 के आँकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा का स्तर व्यापक रूप से वितरित है। अत्यधिक निम्न अभिप्रेरणा केवल 0.50% विद्यार्थियों में पाई गई, जबकि 3.25% विद्यार्थियों में निम्न स्तर की अभिप्रेरणा देखी गई। लगभग 14.75% विद्यार्थी औसत से कम अभिप्रेरणा स्तर में पाए गए, जो यह संकेत देता है कि इस वर्ग के विद्यार्थियों को विशेष प्रेरणात्मक सहयोग की आवश्यकता है। इसके विपरीत, 22.00% विद्यार्थियों में औसत स्तर की अभिप्रेरणा पाई गई। सर्वाधिक विद्यार्थियों (26.75%) में औसत से अधिक अभिप्रेरणा दर्ज की गई, जो यह दर्शाता है कि अधिकांश विद्यार्थी लक्ष्य-उन्मुख, प्रयासशील एवं अध्ययन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हैं। उच्च अभिप्रेरणा स्तर वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 24.00% पाया गया, जबकि 8.75% विद्यार्थियों में अत्यधिक उच्च अभिप्रेरणा देखी गई, जो उनके दृढ़ संकल्प, आत्म-अनुशासन एवं उपलब्धि-उन्मुख प्रवृत्ति को दर्शाती है। इन निष्कर्षों से यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के अधिकांश विद्यार्थियों में अभिप्रेरणा का स्तर औसत से अधिक तथा उच्च श्रेणी में पाया गया है। अत्यधिक निम्न एवं निम्न अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत अत्यंत कम होना यह संकेत देता है कि

Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

समग्र रूप से विद्यार्थियों की अकादमिक अभिप्रेरणा संतोषजनक एवं सकारात्मक है। प्रस्तुत आँकड़ों को ग्राफ 4.2 के माध्यम से अधिक स्पष्ट एवं दृश्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे विभिन्न अभिप्रेरणा स्तरों में विद्यार्थियों के वितरण को सरलता से समझा जा सके।

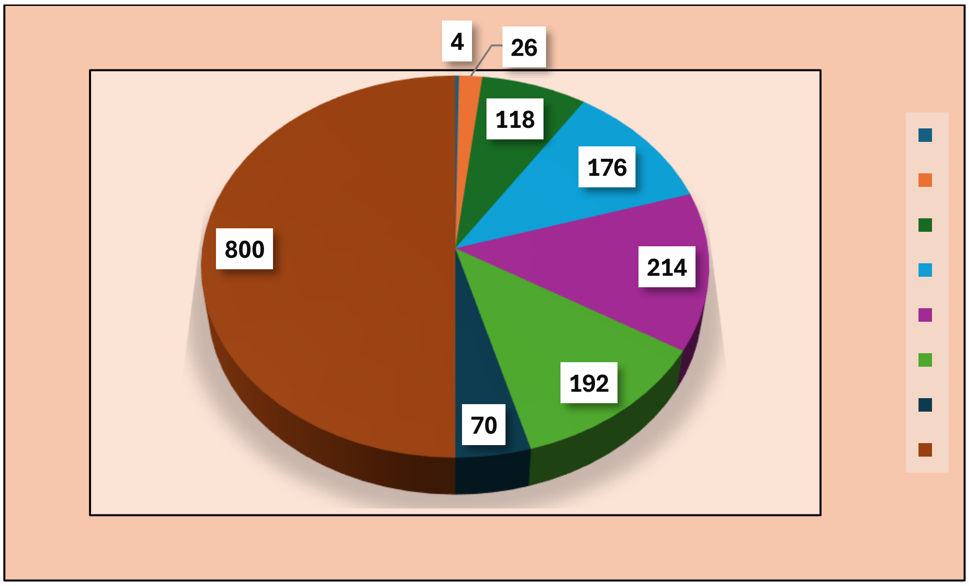

ग्राफ क्रमांक 4.1 उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा के स्तर का प्रतिशत वितरण

प्रस्तुत ग्राफ क्रमांक 4.1 से यह स्पष्ट होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा का वितरण विभिन्न स्तरों में असमान रूप से फैला हुआ है। ग्राफ में यह प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है कि अधिकांश विद्यार्थी औसत से अधिक एवं उच्च अभिप्रेरणा स्तर की श्रेणी में आते हैं, जबकि अत्यधिक निम्न एवं निम्न अभिप्रेरणा स्तर वाले विद्यार्थियों की संख्या तुलनात्मक रूप से अत्यंत कम है। यह दृश्यात्मक प्रस्तुति तालिका 4.2 में प्राप्त निष्कर्षों की पुष्टि करती है तथा विद्यार्थियों की समग्र अभिप्रेरणा स्थिति को सरल, स्पष्ट एवं प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करती है।

4.2 परिणामों की विस्तारित व्याख्या

प्रस्तुत आँकड़ों से यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा का वितरण अत्यंत विविधतापूर्ण है। कुल प्रतिदर्श में केवल 0.50% विद्यार्थी अत्यधिक निम्न अभिप्रेरणा स्तर पर पाए गए, जो यह दर्शाता है कि शैक्षिक स्तर पर प्रेरणा–हीनता अत्यंत न्यूनतम है। इसी प्रकार निम्न श्रेणी के विद्यार्थियों का प्रतिशत 3.25% है, जो बताता है कि प्रेरणा के निम्न स्तर का प्रभाव बहुत सीमित जनसमूह तक है। कुल विद्यार्थियों में 14.75% विद्यार्थी औसत से कम श्रेणी में आते हैं, जिनके लिए प्रेरक शिक्षण–रणनीतियाँ, विशेष अध्ययन–परामर्श, लक्ष्य–निर्धारण गतिविधियाँ एवं आत्म–विश्वास विकास कार्यक्रम अनिवार्य हैं। औसत श्रेणी में 22.00% विद्यार्थी पाए गए, जो अधिकांशतः सामान्य अध्ययन–निष्ठा एवं मध्यम स्तर की प्रयास–निरंतरता प्रदर्शित करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण परिणाम यह है कि अधिकांश विद्यार्थी औसत से अधिक (26.75%) एवं उच्च अभिप्रेरणा स्तर (24.00%) में पाए गए-जो उनकी अध्ययन–प्रतिबद्धता, आत्म–अनुशासन, भविष्य–उन्मुख दृष्टि एवं उपलब्धि–प्रेरणा का अत्यंत सकारात्मक संकेतक है। अत्यधिक उच्च अभिप्रेरणा स्तर वाले 8.75% विद्यार्थी विशेष रूप से महत्वाकांक्षी, लक्ष्य–सचेत एवं निरंतर उपलब्धि की ओर अग्रसर समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं। समग्रतः यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा संरचना अत्यधिक सकारात्मक झुकाव रखती है, जहाँ *उच्च एवं औसत से अधिक स्तर की अभिप्रेरणा कुल मिलाकर प्रमुख श्रेणी* का गठन करती है।

5. चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम संकेत देते हैं कि विद्यार्थियों के भीतर उपलब्धि की चाह, अध्ययन प्रयासों में निरंतरता, लक्ष्य–निर्धारण की क्षमता एवं जीवन–उन्मुख आकांक्षा स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। यह प्रवृत्ति अनेक सामाजिक, पारिवारिक, विद्यालयी एवं व्यक्तिगत कारकों से प्रभावित हो सकती है,जैसे-

- सकारात्मक विद्यालयी वातावरण,

- शिक्षक द्वारा दी जाने वाली प्रेरणा,
- माता–पिता की अपेक्षाएँ,
- प्रतिस्पर्धात्मक शैक्षणिक संरचना,
- करियर–उन्मुख सोच का प्रसार,
- समकालीन सामाजिक–शैक्षिक परिवेश।

अत्यंत निम्न एवं निम्न अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत अत्यंत सीमित होना यह दर्शाता है कि विद्यालयी संरचनाएँ विद्यार्थियों की प्रेरणा क्षमता को पर्याप्त रूप से पोषित कर रही हैं। हालाँकि औसत से कम अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थियों के लिए विशेष परामर्श कार्यक्रम, अध्ययन–कौशल विकास, समय-प्रबंधन प्रशिक्षण एवं आत्म–विश्वास वर्धक गतिविधियों की आवश्यकता बनी रहती है।

6. निष्कर्ष

अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष यह है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अधिकांश विद्यार्थी अभिप्रेरणा के उच्च एवं सकारात्मक स्तरों में पाए गए। शैक्षणिक प्रेरणा का यह रुझान विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता, मानसिक परिपक्वता और भविष्यगत करियर-निर्धारण हेतु अत्यंत अनुकूल है। निम्न अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थियों का सीमित प्रतिशत यह इंगित करता है कि विद्यालयी वातावरण समग्र रूप से प्रेरक एवं विकासोन्मुख है।

7. शैक्षिक निहितार्थ

अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित निहितार्थ उभरते हैं-

- विद्यालयों में प्रेरणा–वर्धक कार्यक्रमों का नियमित आयोजन आवश्यक है।
- लक्ष्य–निर्धारण एवं अध्ययन–कौशल प्रशिक्षण विद्यार्थियों की उपलब्धि क्षमता को बढ़ा सकता है।
- कम अभिप्रेरणा वाले विद्यार्थियों की शीघ्र पहचान एवं व्यक्तिगत मार्गदर्शन अनिवार्य है।
- शिक्षकों की प्रेरक प्रतिक्रिया (प्रेरक प्रतिक्रिया)विद्यार्थियों के अध्ययन व्यवहार को अत्यधिक प्रभावित करती है।

संदर्भ सूची

[1] अग्रवाल, एस. (2018). किशोर विद्यार्थियों की करियर प्रेरणा का सामाजिक अध्ययन (pp. 41–63). लखनऊ: नवभारत प्रकाशन.

[2] अत्रि, के. (2020). विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थी व्यक्तित्व विकास. शैक्षिक मनोविज्ञान अंतरदृष्टि, 16(2), 58–74.

[3] अहिरवार, पी. (2019). माध्यमिक विद्यार्थियों में लक्ष्य–नियोजन एवं अभिप्रेरणा का विश्लेषण. शिक्षा शोध जर्नल, 13(1), 92–108.

[4] बंसल, टी. (2021). सामाजिक–भावनात्मक अधिगम और छात्र समायोजन (pp. 25–49). जयपुर: राजस्थान पब्लिकेशन हाउस.

[5] बरनवाल, ए. (2022). विद्यार्थी करियर निर्णय–निर्माण पर पारिवारिक परिवेश का प्रभाव. भारतीय शिक्षा समीक्षा, 18(3), 77–95.

[6] चक्रवर्ती, एम. (2017). समायोजन व्यवहार और किशोर मनोविज्ञान (pp. 10–34). कोलकाता: ज्ञानभारती प्रकाशन.

[7] देव, आर. (2020). व्यवसायिक आकांक्षाओं में विद्यालयी परामर्श की भूमिका. राष्ट्रीय शिक्षा शोध पत्रिका, 14(4), 101–118.

[8] धवन, एस. (2022). विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा एवं अध्ययन–आदतों का संबंध. मनोविज्ञान शोध संकेत, 21(1), 33–52.

[9] नायर, आर. (2019). किशोरों में सामाजिक समर्थन और समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन (pp. 29–57). तिरुवनंतपुरम: दक्षिण भारत प्रकाशन.

[10] पाण्डेय, एम. (2018). व्यावसायिक चयन पर लिंग का प्रभाव. भारतीय मनोविज्ञान जर्नल, 11(2), 66–82.

[11] प्रजापति, टी. (2020). विद्यार्थी अभिप्रेरणा और आत्म–प्रभाविता का संबंध (pp. 18–47). अहमदाबाद: सुदर्शन प्रकाशन.

[12] मलिक, जे. (2021). करियर आकांक्षाएँ एवं सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि: एक विश्लेषण. शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, 9(2), 55–73.

[13] राय, बी. (2017). छात्र समायोजन पर विद्यालयी सहभागिता का प्रभाव. मनोविज्ञान अंतरदृष्टि जर्नल, 12(1), 40–58.

[14] शर्मा, क. (2020). उपलब्धि अभिप्रेरणा और अध्ययन परिणाम: एक सहसंबंधीय अध्ययन. भारतीय शिक्षा अनुसंधान समीक्षा, 15(3), 90–104.

[15] सिंह, आर. (2021). उच्चतर माध्यमिक विद्यार्थियों की करियर महत्वाकांक्षा का मनोवैज्ञानिक परीक्षण (pp. 51–84). वाराणसी: सत्यम प्रकाशन.